International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 145-153

डॉ0 मनमोहन सिंह का प्रधानमंत्रित्व काल का समीक्षात्मक अध्ययन

आरती द्विवेदी[1], डॉ0 गायत्री मिश्रा[2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

डॉ. मनमोहन सिंह अपनी गठबन्धन सरकार में सोनिया गांधी की भूमिका को लेकर विशेषज्ञों ने भले ही कुछ भी राय दी हो परन्तु इसे उत्तरदायित्वों का उचित विभाजन कहना अधिक युक्ति संगत होगा। प्रधानमंत्री के तौर पर डॉ. मनमोहन सिंह का कार्यकाल साक्षी है कि राष्ट्रहित के मामलों में उन्होंने सदा सामने आकर अपनी योग्यता, प्रतिभा और अनुभव का परिचय दिया है। डॉ. सिंह अधिक बोलना पसन्द नहीं करते थे, वे हमेशा भारतीय राजनीति में शामिल होकर प्रधानमंत्री के पद में रहकर भारतीय अर्थव्यवस्था को सुधारने एवं देश की आम जनता के विकास के लिए जुटे रहे। राजनीति में विपक्षी पार्टी डॉ. सिंह पर भले ही कुछ आरोप प्रत्यारोप लगाती रही किन्तु उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में आठ प्रतिशत वृद्धि के सरकार के लक्ष्य को पूर्ण करने में सफल रहे।

आर्थिक मामलों में डॉ. मनमोहन सिंह की जितनी भूमिका देश के लिए रही शायद वर्ष 1951 से लेकर वर्तमान तक किसी भी नेता में नहीं पाई गई। कुशल व्यक्तित्व के धनी अर्थशास्त्र के चाणक्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अर्थशास्त्री, आर्थिक विचारक डॉ. मनमोहन सिंह ने वर्ष 1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था को डूबने से बचाकर पटरी पर लाने में सफलता हासिल की है।

भारत को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए मनमोहन सिंह ने कई मजबूत कदम उठाये तथा जिसे देश की जनता को तो लाभ हुआ भी साथ ही सम्पूर्ण विश्व अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत एक मजबूत राष्ट्र बनकर उभरा है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का दूसरी बार लगातार प्रधानमंत्री (2009 से मई 2014) के पद पर निर्वाचित होना यह स्वतः प्रमाणित कर देता है कि डॉ. मनमोहन सिंह एक लोकप्रिय नेता, उदारीकरण के जनक, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अर्थशास्त्री होने के साथ–साथ एक सफल प्रधानमंत्री भी रहे हैं।

मूल शब्द : डॉ. मनमोहन सिंह, भारत, प्रधानमंत्रित्व काल, समीक्षात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितम्बर 1932 को पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से दक्षिण पश्चिम लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक छोटा सा गांव ''गाह'' पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। वर्तमान में यह गांव वैसा ही है जैसा 60–70 वर्ष पहले हुआ करता था। आधुनिक सुख सुविधाओं का अभाव एवं संसाधनों की अपर्याप्तता और गरीबी रेखा के नीचे का जीवन स्तर प्रधानमंत्री के गृहग्राम में आज भी स्पष्ट दिखाई देता है।

डॉ. मनमोहन सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा उन्हीं के गाँव में एक टूटा फूटा सरकारी प्राइमरी स्कूल में हुई। डॉ. सिंह के पिता का नाम सरदार गुरूमुख सिंह कोहली था तथा माता का नाम अमृत कौर था। डॉ. मनमोहन सिंह के पिताजी अपने बेटे को कोहली तथा माता मोहन कहकर बुलाती थी। आज भी गृह ग्राम गाह के बुजुर्ग लोग डॉ. सिंह को मोहन के नाम से ही जानते हैं। डॉ. सिंह का सम्पूर्ण बचपन गांव में बीता।

डॉ. मनमोहन सिंह के पिता सरदार गुरूमुख कोहली मेवों के व्यापारी थे और अपने काम से अक्सर अमृतसर आया–जाया करते थे। विभाजन के समय सरदार गुरूमुख सिंह कोहली का पूरा परिवार (पाकिस्तान) गाह ग्राम में ही रह रहा था। गाह ग्राम में साम्प्रदायिक दंगों का असर न के बराबर था। विभाजन के समय अमृतसर पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू तथा सिख शरणार्थियों के लिए प्रमुख प्रवेश द्वार था। ये शरणार्थी रेलगाड़ी या बाधा सीमा के जरिये निरंतर भारत में शरण ले रहे थे। डॉ. सिंह का परिवार इस विभाजन के इस परिणाम से बच नहीं पाया। अन्ततः डॉ. मनमोहन सिंह के पिता सरदार गुरूमुख कोहली अपने पूरे परिवार सहित भारत की शरण में आ गये।

डॉ. मनमोहन सिंह के गृहग्राम ''गाह'' गाँव के पुराने बुजुर्ग लोग बताते हैं कि डॉ. सिंह इसी गाँव के एक टूटे–फूटे सरकारी प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे। पेड़ के नीचे बैठा एक बुजुर्ग मोहम्मद असरफ भारत के विद्वान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के बारे में नहीं जानता था किन्तु जब वह बुजुर्ग डॉ. सिंह के पिता सरदार गुरूमुख सिंह कोहली का नाम लिया तो तुरंत उसे याद आया उनका बेटा मेरे साथ ही पढ़ता था। मै कक्षा में फेल हो गया था किंतु मनमोहन बहुत अच्छे नम्बर लेकर मेरे से आगे निकल गये। 70 वर्षीय बुजुर्ग मोहम्मद असरफ को जब बताया गया कि आपके बचपन का सहपाठी मोहन ही भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह है तो उस बुजुर्ग की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

डॉ. मनमोहन सिंह जब पैदा हुए उस वक्त ''गाह'' गांव की लगभग 50 प्रतिशत आबादी हिन्दुओं और सिक्खों की थी और 50 प्रतिशत आबादी मुसलमानों की थी किन्तु वर्तमान में यहां शत प्रतिशत आबादी मुसलमानों की है। 1947 में विभाजन के समय गाह गाँव के पुराने हिन्दू और सिक्ख परिवार भारत में आकर बस गये। उस समय हर जगह दंगे हुए, परन्तु गाह में इसका प्रभाव कुछ कम हुआ, गाँव के लोगों के आपसी प्रेम, व्यवहार, भाईचारा, सदभाव कायम था।

डॉ. मनमोहन सिंह को प्रदत्त पुरस्कार एवं सम्मान का विश्लेषण वर्ष 1952 से अब तक –

तालिका 1

क्र.	वर्ष	पुरस्कार एवं सम्मान
1.	1952	यूनिवर्सिटी मेडल पंजाब विश्वविद्यालय
2.	1954	उत्तरचन्द कपूर मेडल पंजाब विश्वविद्यालय
3.	1956	एडम स्मिथ पुरस्कार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, लन्दन इंग्लैण्ड
4.	1955	राइटज पुरस्कार सेन्ट जॉस कालेज, इंग्लैण्ड
5.	1957	रेनवटी सकालर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड
6.	1976	सम्मानित प्रो. जे.एन.यू., नई दिल्ली
7.	1982	सदस्य, इण्डियन इंस्टी. ऑफ बैंकर्स
8.	1982	सदस्य, सेन्ट जॉस कालेज, इंग्लैण्ड
9.	1985	निर्वाचित अध्यक्ष, इण्डियन इकोनामी ऐसोसियेशन
10.	1986	सदस्य, एन.सी.ई.आर.टी. शैक्षिक संस्थान
11.	1987	पदम विभूषण सम्मान महामहिम राष्ट्रपति द्वारा
12.	1994	सदस्य, ऑल इण्डिया मैनेजमेंट ऐसोसियेशन
13.	1993	सूरेमानी अवार्ड श्रेष्ठ वित्त मंत्री।
14.	1994	सदस्य, न्यू फिल्ड कालेज, लन्दन इंग्लैण्ड।
15.	1994	लन्दन स्कूल आफ इकोनामिक्स सदस्य
16.	1994	एशिया मनी अवार्ड सर्वश्रेष्ठ वित्तमंत्री।
17.	1995	जवाहरलाल जन्म शताब्दी पुरस्कार इण्डियन साइन्स कांग्रेस असोसियेशन द्वारा
18.	1996	सम्मानित प्रोफेसर दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
19.	1997	निककेई एशिया पुरस्कार से सम्मानित क्षेत्रीय विकास के लिए जापान को अग्रणीय व्यापारिक दैनिक के प्रकाशन निक्केई द्वारा
20.	1997	जस्टिस के एस हेगेड फाउन्डेशन अवार्ड (वर्ष 1996 के लिए)
21.	1997	लोकमान्य तिलक अवार्ड तिलक स्मारक ट्रस्ट पुणे द्वारा प्रदत्त
22.	1999	नेशनल एकडमी ऑफ एग्रीकल्चर साइन्सेस (राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी) नईदिल्ली के सदस्य बने।
23.	1999	एच.एच.कॉची श्री परमाचार्य अवार्ड बेहतर सेवाओं के लिए द सेंटेनिरियन ट्रस्ट द्वारा प्रदत्त।
24.	2000	अन्ना साहेब चिरमूले अवार्ड यूनाइटेड वैस्ट्रन बैंक लिमिटेड सतारा महाराष्ट्र द्वारा स्थापित अन्ना साहेब चिरमूले ट्रस्ट द्वारा प्रदत्त।
25.	2001	सदस्य राज्यसभा भारत
26.	2004	भारत के प्रधानमंत्री के पद पर आसीन (22 मई 2004 से 26 मई 2014 तक)
27.	2005	डी.लिट मानक उपाधि आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लन्दन द्वारा

स्रोत – भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 181–182.

1. प्रथम नियुक्ति कालावधि

डॉ. मनमोहन सिंह 22 मई सन् 2004 को भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में प्रथम नियुक्ति महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। जिस समय भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम डॉ. मनमोहन सिंह को शपथ दिला रहे थे वह दिन भारतीय गणराज्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त पहली बार ऐसा हुआ कि जब एक अल्प संख्यक समुदाय से सम्बन्ध रखने वाले प्रधानमंत्री को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

यद्यपि महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और डॉ. मनमोहन सिंह दोनों को अपने अपने क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त थी। डॉ. अब्दुल कलाम एक विश्वविख्यात वैज्ञानिक थे और देश के परमाणु कार्यक्रम को नई दिशा देने में उनकी अभिनन्दनीय भूमिका थी, वही डॉ. मनमोहन सिंह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त अर्थशास्त्री, अर्थयोगी एवं विश्वविख्यात आर्थिक विचारक है, जो भारत देश की अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुधारों के सूत्रधार माने जाते हैं। यह देश के लिए 22 मई 2004 को बहुत हर्ष और गौरव की बात थी की ऐसी अदभुत प्रतिमाएँ आज देश का नेतृत्व कर रही है।[1]

यद्यपि 22 मई सन् 2004 डॉ. मनमोहन सिंह गठबन्धन सरकार के गठन की औपचारिकताएँ पूर्ण करने का दिन था। राष्ट्रपति भवन का अशोक हाल शपथ ग्रहण समारोह के लिए तैयार था। भारत देश की नामी हस्तियां शपथ समारोह में शामिल होने के लिए राष्ट्रपति भवन पहुंच चुकी थी। निर्धारित समय पर शपथ समारोह अथवा शपथ ग्रहण कार्यक्रम की शुरूआत हुई और इस तरह डॉ. मनमोहन सिंह को प्रथम बार भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

ज्ञातव्य हो कि 22 मई 2004 के ऐतिहासिक क्षणों की यादगार बनाने के लिए देश भर के अनेक शहरों में सजावट विशेष रूप से गुरूद्वारों में सजावट एवं रोशनी की गई थी। भारत के सुदूर पूर्व स्थित राज्य असम में भी उत्सव का माहौल स्पष्ट देखा गया था। डॉ. सिंह के प्रधानमंत्री बनने की खुशी में जगह–जगह नृत्य और संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। असम कांग्रेस के मुख्यालय राजीव भवन के ऊपर डॉ. मनमोहन सिंह और सोनिया गांधी की बड़ी–बड़ी तस्वीरें लगाई गई थी। देश की राजधानी दिल्ली में हो रहे शपथ ग्रहण समारोह का सीधा प्रसारण देखने के लिए राजीव भवन के प्रांगण में काफी बड़ी टेलीवीजन स्क्रीन का प्रबन्ध किया गया था। जैसे ही डॉ. मनमोहन सिंह और उनकी गठनबंधन सरकार के 68 मंत्रियों ने शपथ ग्रहण की असम कांग्रेस मुख्यालय पर आतिशबाजी की गई और लोगों ने डॉ. मनमोहन सिंह के नई गठबन्धन सरकार का स्वागत किया।[2]

विगत 50 वर्षों तक आर्थिक क्षेत्र में निर्णायक भूमिका निभाने वाले डॉ. मनमोहन सिंह का प्रधानमंत्री बनना देश की आर्थिक उन्नति के लिए एक ऐतिहासिक घटना थी। उनकी कार्यकुशलता, ज्ञान और सूझबूझ पर किसी को कोई संदेह नहीं है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने स्वयं कहा था कि डॉ. मनमोहन सिंह के हाथों में देश पूर्णतः सुरक्षित है। डॉ. सिंह ने सोनिया गांधी का यह अटूट विश्वास अकारण नही था। वह भलीभांति जानती है कि केवल डॉ. मनमोहन सिंह ही ऐसे व्यक्ति हैं

जो राजनैतिक षडयंत्रों से दूर रहकर देश के विकास के मार्ग पर ले जा सकते हैं। डॉ. सिंह के जीवन का गहन अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है कि वे एक अच्छे कर्मयोगी है, जिस प्रकार कर्मयोगी व्यक्ति फल की इच्छा किए बिना जीवन में निरंतर परिश्रम करता है, उसी प्रकार डॉ सिंह ने सदैव अपने जीवन में काम को महत्व दिया है।

यह सर्वविदित है कि डॉ. सिंह को अभी तक जो भी उत्तरदायित्व सौंपा गया है उनको उन्होंने बखूबी निभाया है। डॉ. मनमोहन सिंह की गठबन्धन सरकार में प्रधानमंत्री पद कांटो भरे ताज के समान होता है। डॉ. सिंह को हर क्षण नई–नई कठिनाइयो को दृष्टिगत रखना पड़ा है। अनेक प्रकार की राजनैतिक समस्याएँ विभिन्न दलों के नेताओं द्वारा सरकार के सामने उत्पन्न की किन्तु डॉ. सिंह निरन्तर परिस्थितियों को अपने नियंत्रण में रखते हुए देश का नेतृत्व किया और सफलतापूर्वक पहले पांच वर्ष लक्ष्यों को पूर्ण करने में सफलता हासिल की।

ज्ञातव्य है कि वर्ष 2004 के चुनाव में लोकसभा में राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी को युवाओं का भरपूर समर्थन प्राप्त हुआ था। भारतीय जनता पार्टी को युवा वर्ग पसन्द नहीं किए और उन्हें पर्याप्त बहुमत न मिली। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हमेशा इतिहास रहा है कि पार्टी ने सदा वयोवृद्ध नेताओं के अनुभव तथा युवाओं के उत्साह व जोश का भरपूर लाभ मिला है, वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में भी ऐसा ही हुआ है।

वर्ष 2004 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह 70 की दहलीज पार कर चुके थे, परन्तु उस समय युवाओं ने जोश व उत्साह बरकरार रखा, उनमें देश को विकास की सीढ़ी पर पहुंचाने का जोश रहा तीक्ष्ण बुद्धि वाला यह सरदार (डॉ मनमोहन सिंह) हर समय ऊर्जावान की भूमिका निभाई। घन्टो काम करने के बाद कुछ देर आराम करके डॉ. मनमोहन सिंह फिर से तरोताजा होकर अपने लक्ष्य एवं उद्देश्यों को मूर्त रूप देने में जुट जाते थे। कांग्रेस की युवा विग्रेड के लिए प्रेरणा श्रोत माने जाने वाले डॉ. मनमोहन सिंह अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल में युवा वर्ग के लिए कारगर एवं आदर्श स्वरूप सिद्ध हुए हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह बेदाग छवि वाले भद्र नेता रहे हैं। प्रथम प्रधानमंत्रित्व कालावधि के समय उनके मंत्रिमण्डल में शामिल कुछ मंत्रियों के विरूद्ध आपराधिक मामले न्यायालय में विचाराधीन है। अपराधिक मामले जैसे–भ्रष्टाचार, आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने, घोटाले आदि ऐसे ही अन्य मामलों में फंसे इन नेताओं का अपने मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं किए, साथ ही मामले में फंसे नेताओं का गठनबन्धन सरकार बनाने में एक राजनैतिक मजबूरी ही कही जा सकती है। क्योंकि इन नेताओं के समर्थन पर ही संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार का अस्तित्व टिका था। यह सच भी है कि मंत्रिमण्डल के निर्धारण में डॉ. मनमोहन सिंह कोई विशेष भूमिका नहीं निभाई थी। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार में शामिल दलों को सरकार में निश्चित जगह देनी थी और इस आधार पर ये नेता सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त हुए।

डॉ. मनमोहन सिंह अपने प्रथम प्रधानमंत्रित्व काल में 24 पृष्ठों का दस्तावेज न्यूनतम साझा कार्यक्रम का नाम दिया। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार के नीति निर्धारण में अपने प्रभाव का संकेत देते हुए श्रीमती सोनिया गांधी (अध्यक्ष राष्ट्रीय कांग्रेस) ने 24 मई 2004 को 7 रेस कोर्स रोड नई दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री निवास पर एक सादे समारोह में न्यूनतम साझा कार्यक्रम की निर्देशिका का लोकार्पण किया। इस अवसर पर संप्रग सरकार के सभी सहयोगी तथा समर्थक उपस्थित थे। लोकार्पण की औपचारिकताएं पूर्ण होने के बाद प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने न्यूनतम साझा कार्यक्रम के मुख्य बिन्दुओं का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत करते हुए उपस्थिति सभासदों को सरकार की भावी योजनाओं से अवगत कराया।

न्यूनतम साझा कार्यक्रम में रोजगार गारंटी विधेयक लाने की बात कहकर मनमोहन सरकार ने देश के बेरोजगार युवकों को रोजगार उपलब्ध कराने एवं बेरोजगार को आत्मनिर्भर बनाने का एक प्रयास था, परन्तु बुद्धिजीवियों की राय थी कि बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए संसद में कानून बनाने की अपेक्षा नए रोजगार के साधनों के सृजन एवं उत्पत्ति पर कार्य करने की आवश्यकता है, तभी राष्ट्रीय स्तर पर बेरोजगारी की समस्या का समाधान संभव हो सकेगा। इस प्रकार संयुक्त प्रगतिशील मनमोहन सिंह प्रधानमंत्रित्व काल में गठबन्धन सरकार द्वारा राष्ट्रीय न्यूनतम साझा कार्यक्रम का बिन्दुवार विश्लेषण निम्नानुसार है –

ग्रामीणों के लिए प्रयास

डॉ. मनमोहन सिंह सरकार ने अपने न्यूनतम साझा कार्यक्रम में ग्रामीण कृषकों, कृषि श्रमिकों के लिए व्यापक सुरक्षा कानून बनाये जाने की बात कही निःसंदेह यह एक ऐसा वायदा था जिसके द्वारा श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन सरकार से एक कदम आगे हुए अपने संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार ने अपने आभार की सुदृढ़ करने का प्रयास किया गया था।

मनमोहन सरकार न्यूनतम साझा कार्यक्रम में शिक्षा पर सरकारी व्यय को बढ़ाकर सकल घरेलू उत्पाद का न्यूनतम 6 प्रतिशत तक करने का वायदा किया। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अनुसार सामाजिक आधारभूत ढांचे तथा मानवीय संसाधनों के क्षेत्र मे निवेश करना लाभ का सौदा है जिससे कोई भी देश तब तक विकास नहीं कर सकता जब तक उसके नागरिक अभावग्रस्त में जीवनयापन के लिए मजबूर हैं, गुणवत्ता पूर्वक बुनियादी शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए धन की व्यवस्था करने हेतु सभी केन्द्रीय करों पर उपकर लगाने का भी प्रावधान प्रमुखता से सुझाया गया।

आर्थिक सुधारों का मानवीय पहलु

न्यूनतम साझा कार्यक्रम में मानवीय आधार पर आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए स्पष्ट किया कि संप्रग सरकार द्वारा आर्थिक सुधार कार्यक्रमों के माध्यम से आम नागरिकों के जीवनस्तर को बेहतर बनाने का प्रयास किया जायेगा। आर्थिक सुधारों के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का दृष्टिकोण भी नहीं रहा है कि आर्थिक सुधारों के लाभ किसी वर्ग विशेष तक सीमित न रहकर सभी लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाना चाहिए।[3]

डॉ. सिंह न्यूनतम साझा कार्यक्रम अन्तर्गत में छोटे कामगारों तथा निर्धन लोगों के कल्याण एवं भलाई उनकी आर्थिक उन्नति के प्रति वचनबद्धता दोहराते हुए स्पष्ट किया कि सरकार सभी कामगारों, विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों जैसे–बुनकरों, हथकरघा कामगारों, मछुआरों ताड़ी निकालने वाले लोगों, चमड़ा का कार्य करने वाले लोगों, बीड़ी बनाने वाले श्रमिकों, कुम्हार उद्योग, डेयरी उत्पादन, रेशम उत्पादन, ऊन उत्पादन, दरी एवं कम्बल बनाने वाले श्रमिकों स्वास्थ्य बीमा और अन्य श्रमिकों के लिए योजनाएँ बनाकर विस्तार किया गया।

राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी अधिनियम के तहत कम से कम 100 दिन के लिए रोजगार की गारण्टी दी गई। प्रतिवर्ष ऐसे परिसम्पत्ति सृजक सार्वजनिक निर्माण कार्यों का प्रावधान किया गया, जिसमें प्रत्येक ग्रामीण शहरी गरीब तथा निम्न मध्यम वर्ग के प्रत्येक परिवार में कम से कम एक समर्थ व्यक्ति को न्यूनतम मजदूरी मिल सके इसी दौरान एक व्यापक काम के बदले अनाज कार्यक्रम की भी शुरूआत हुई।

कृषि अनुसंधान एवं विस्तार

डॉ. मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार ने कृषि अनुसंधान एवं विस्तार, ग्रामीण बुनियादी सुविधाएँ, सिंचाई के साधनों में विस्तार, सार्वजनिक निवेश की शीघ्रातिशीघ्र पर्याप्त रूप से बढ़ाया जाये। सिंचाई का निवेश में उच्चतम प्राथमिकता प्रदान की। सभी चालू सिंचाई परियोजनाओं का निर्धारित समय सीमा पर पूर्णता प्रदान किया गया। साथ ही लघु एवं सीमान्त कृषकों को संस्थागत ऋण उपलब्ध कराया गया।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार शिक्षा पर सरकारी व्यय को बढ़ाकर सकल घरेलू उत्पाद का न्यूनतम 6 प्रतिशत तक किया गया, जिसमें 50 प्रतिशत राशि प्राथमिक शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा पर खर्च किए जाने का प्रावधान निश्चित किया गया। साथ ही बुनियादी शिक्षा के लिए सभी की पहुंच होने के लिए धन की व्यवस्था की गई। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में मुख्यतः केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित एक राष्ट्रीय मध्यान्ह भोजन, पका भोजन की स्कीम आरम्भ की गई। साथ ही सरकार स्वास्थ्य सेवाओं पर सरकारी व्यय को अगले पांच वर्षो में बढ़ाकर घरेलू उत्पादन कम से कम 2 से 3 प्रतिशत की प्राथमिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया तथा संक्रामक बीमारियो को रोकने के लिए राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम चलाया गया।

महिला प्रोत्साहन

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार महिलाओं के लिए विधानसभाओं और लोकसभा में एक तिहाई आरक्षण हेतु कानून बनाने के लिए पहल किए। घरेलू हिंसा सभी पुरूषों के बीच भेदभाव दूर करने सम्बन्धी कानून बनाये गये। महिलाओं के लिए सभी क्षेत्रों में सम्पूर्ण कानूनी स्वतंत्रता एवं समानता को एक व्यावहारिक सच्चाई बनाई गई विशेषकर भेदभावपूर्ण कानूनों को समाप्त करके तथा ऐसे नये कानून बनाकर जो महिला को मकान, भूमि जैसी सम्पत्तियों पर स्वामित्व के समान अधिकार प्रदान किये गये।

अनुसूचित जाति एवं जनजातियों का उत्थान

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार राज्यों के लिए ऐसे कानून बनायी है कि वनों में काम करने वाले कमजोर वर्गों के सभी लोगों को तेंदू पत्ता सहित लघु वन उपज सम्बन्धी मालिकाना हक मिले। इन जातियों के लिए नौकरी, पदोन्नति, आदि में आरक्षण का पालन किया गया। साथ ही आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्रों में कृषि विस्तार हेतु सघन सिंचाई एवं भूमि का स्वामित्व प्रदान किए।

सामाजिक सौहार्द्र, अल्पसंख्यकों का कल्याण

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार पूजा स्थल विशेष अधिनियम 1992 के कार्यान्वयन को प्रतिबद्धता दिखाई है। अयोध्या मामले में यह न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा किए। साथ ही साथ इस विवाद के सौहार्द्रपूर्ण समाधान के लिए सभी पक्षों से बातचीत कर संतुष्ट करने का प्रयास किया, जिसे बाद में कानूनी स्वीकृति मिलने का इंतजार किया गया।[4]

बुनियादी ढांचा

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन मनमोहन सिंह सरकार सड़कों, राष्ट्रीय राज्यमार्गों, बन्दरगाहों, रेलों एवं रेलमार्गों, जलापूर्ति, जल मल विसर्जन और स्वच्छता जैसे भौतिक आधारभूत ढांचे के विकास के लिए कार्यक्रम चलाये। बुनियादी ढांचे में निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने के साथ–साथ सरकारी निवेश में वृद्धि सब्सिड़ी को सुस्पष्ट किया गया।

क्षेत्रीय विकास केन्द्र और राज्य सम्बन्ध

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार वित्तीय प्रशासनिक, निवेश और अन्य माध्यमों से राज्यों और केन्द्र के बीच संतुलन बनाये रखने के लिए अनेक प्रयास किए। चिन्ता का विषय था कि क्षेत्रीय अंसुतुलन न केवल ऐतिहासिक उपेक्षा अपितु योजना आबंटनों और केन्द्र सरकार की सहायता से विसंगतियों के कारण भी बढ़ता है।

प्रशासनिक सुधार

संयुक्त प्रगतिशीली विकास को गति प्रदान करने वाली गठबन्धन सरकार लोक प्रशासन प्रणाली में सुधार लाने हेतु एक विस्तृत रूपरेखा ब्लू प्रिंट तैयार करने के लिए प्रशासनिक सुधार आयोग का गठन करेगा, ई गवर्नेंस को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया जायेगा, सूचना का अधिकार अधिनियम को अधिक प्रगतिशील, भागीदारी पूर्ण और सार्थक बनाने के लिए सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 लागू किया गया।

औद्योगिक विकास

डॉ. मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सभी जरूरी कदम उठायेगा और जहाँ आवश्यक होगा वहां नियंत्रण मुक्त करते हुए अनेक नीतियों के माध्यम से इसे मजबूती प्रदान की है। विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बुनियादी ढांचे, उच्च प्रौद्योगिकी और निर्यात एवं ऐसे क्षेत्रो के लिए बढ़ावा दिया जायेगा जहां स्थानीय परिस्थितियों एवं परसम्पत्तियों तथा रोजगार का सृजन बड़े पैमाने पर किया जा सके।

श्रमिकों की उन्नति

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, जो हमारे कुशल कार्यबल का 93 प्रतिशत है, उनके उत्थान और गलाई के लिए योजनाएं चलाई गई। बुनकरों, हथकरघा कामगारों, मछुआरों, ताड़ी निकलने वाले लोगों, चमड़े का काम करने वाले श्रमिकों, वनोपज संग्रहण श्रमिकों, बीड़ी बनाने वाले श्रमिकों, चटाई, कम्बल, मोमबत्ती बनाने वाले श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा और अन्य स्कीमों का विस्तार किया गया।

सार्वजनिक क्षेत्र

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार एवं उन्नति के लिए प्रतिबद्धता दिखाई है। सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु व्यापारिक एवं वाणिज्यिक संस्थानों का विस्तार तथा सफल लाभ कमाने वाली कम्पनियों को पूर्ण प्रबन्धकीय और वाणिज्यिक स्वायत्ता प्रदान करने के लिए बचनबद्ध रही है। साथ ही निजीकरण से प्रतिस्पर्धा में वृद्धि पर नियंत्रण, सामाजिक जरूरतों पर सीधा सम्पर्क स्थापित किया, साथ ही छोटे निवेशकों के निवेश के लिये नवीन अवसर उपलब्ध हुए हैं।

राजकोषीय नीति

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह सरकार ने वर्ष 2009 तक के केन्द्र घाटे को दूर रखने के लिए प्रतिबद्धता स्थापित की हैं ताकि सामाजिक और भौतिक ढांचे मे निवेश के लिए अधिक से अधिक संसाधन दिए जा सके। सभी राज सहायता गरीबों और वास्तव में जरूरतमंदों जैसे लघु एवं सीमान्त कृषकों, कृषि मजदूरों तथा शहरी गरीबों के लिए ही होगी। इस कार्य को पूरा करने के लिए एक विस्तृत योजना 90 दिनों के अन्दर संसद में प्रस्तुत की जायेगी।

संयुक्त प्रगतिशील मनमोहन सिंह सरकार निवेश और विकास परिव्ययों में कमी या कटौती करके घाटे को कम करने का प्रयास नहीं करने के लिए व्यवस्था बनाई।

आर्थिक सुधार

संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार मानवीय आधार पर आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई है, जिससे विकास और निवेश तथा रोजगार को बढ़ावा मिले, कृषि उद्योग तथा सेवा क्षेत्रों में सुधारों की ओर अति आवश्यकता महसूस की गई तथा इन्हें इन क्षेत्रों में आगे बढ़ाया जाने के लिए कदम उठाये गये। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह आर्थिक सुधार के लिए विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों में खुशहाली लाने सार्वजनिक प्रणालियों की गुणवत्ता तथा सार्वजनिक सेवाओं की उपलब्धता में पर्याप्त रूप से सुधार करने और देश के आम नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु प्रयास किये गये।

रक्षा एवं आंतरिक सुरक्षा

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रथम प्रधानमंत्रित्व काल में सशस्त्र बलों के आधुनिककरण में किसी प्रकार का कोई विलम्ब व व्यवधान न उत्पन्न हो सके तथा आधुनिकीकरण के लिए निर्धारित समस्त धनराशि का सदुपयोग हुआ है। रक्षा मंत्रालय में एवं नये भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग की स्थापना की गई जिसमें एक रैंक पेन्सन, एक रैंक के काफी समय लम्बित पड़े मुद्दे फिर से जांच की गई तथा राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद को और अधिक व्यवसायी तथा प्रभावी बनाया गया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार भारत के लिए व्यापक विज्ञान और प्रौद्योगिकी ढांचे को सुदृढ़ करने वाली नीतियों का क्रियान्वयन तथा प्रमुख क्षेत्रों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास एवं मिशन अनुप्रयोग शामिल है। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार देश में संस्थागत विकास अन्य परियोजनाओं के लिए अनेक कार्यक्रम आरम्भ किये।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन एवं विदेश नीति

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार अपनी पिछड़ी परम्पराओं को ध्यान में रखकर एक स्वतंत्रत विदेश नीति का अनुसरण किए हैं। इस नीति में विश्व सम्बन्धों में बहुध्रुवता को बढ़ावा दिया जायेगा तथा एकपक्षीय बाढ़ के सभी प्रयासों का विरोध किये जाने से बचाव सम्भव है।

राष्ट्रीय सुरक्षा

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने राष्ट्रीय सुरक्षा के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए। चीन और पाकिस्तान दोनों देशो के साथ भारत का सीमा विवाद बहुत गहरा एवं पुराना है। सीमाविवाद के चलते विपरीत विचारधाराओं के बावजूद ये दोनों देशों ने भारत के विरूद्ध एकजुट दिखाई देते थे। ऐसी स्थिति में चीन ने पाकिस्तान को प्रक्षपास्त्र तथा परमाणु तकनीक से मदद कर भारत के सम्मुख एक परमाणु शक्ति के रूप मे खड़ा कर दिया था।

2. द्वितीय नियुक्ति कालावधि

15 वीं लोकसभा के चुनाव में संयुक्त गठबन्धन की विजय हुई और डॉ. मनमोहन सिंह मई 2009 की दूसरी बार प्रधानमंत्री नियुक्त किये गये। डॉ. सिंह को दूसरी बार पूरे पांच वर्ष 2009 से 22 मई 2014 तक प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिला। अतः 22 मई 2004 से 22 मई 2014 तक (दस वर्ष) दो पंचवर्षीय भारत के प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किये गये। डॉ. मनमोहन सिंह एक कुशल राजनेता के साथ एक अच्छे अर्थशास्त्री और विचारक भी है, जो अपनी सादगी और अन्तर्मुखी स्वभाव के लिए जाने जाने वाले डॉ. मनमोहन सिंह बेहद चतुर और बुद्धिमान व्यक्तित्व वाले प्रधानमंत्री के रूप में अपना कार्यकाल दूसरी बार भी पूरा किए हैं। शिक्षा के प्रति रूझान ने उन्हे प्रधानमंत्री पद तक पहुंचा दिया लेकिन आज भी वह खुद अपने को एक आम इंसान ही मानते हैं।

डॉ मनमोहन सिंह आर्थिक सुधारों के जनक कहे जाते हैं, उनके प्रधानमंत्रित्व काल में देश की डूबती हुई अर्थव्यवस्था को उभारने में कामयाबी हासिल किए है। 2 अक्टूबर 2009 को राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी (नरेगा) का फिर से नामकरण किया था। इस योजना की खास बात यह है कि इसके तहत पुरूषों और महिलाओं के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव की अनुमति नहीं है, इसलिए पुरूषों और महिलाओं को समान वेतन भुगतान किया जाना चाहिए तथा सभी वयस्क रोजगार के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस प्रकार डॉ. मनमोहन सिंह के द्वितीय प्रधानमंत्रित्व काल में भारत के राजपत्र 31 दिसम्बर 2009 के अन्तर्गत राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी योजना का नाम 2 अक्टूबर 2010 से महात्मा गांधी रोजगार गांरटी अधिनियम 2005 किया गया है।[5] इस योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत प्रत्येक परिवार के एक वयस्क व्यक्ति को जो अकुशल मानव श्रम करने हेतु तैयार है, एक वित्तीय वर्ष में कम से कम 100 दिवस का रोजगार उपलब्ध कराना तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्थायी परिसम्पत्तियों का सृजन करना है।

डॉ. मनमोहन सिंह ने आधार कार्ड योजना की शुरूआत की थी। प्रधानमंत्री डॉ. सिंह की आधारकार्ड योजना को यू.एन. ने भी तारीफ की थी। यू.एन. की ओर से कहा गया था कि आधार भारत जैसे विशाल आबादी वाले राष्ट्र के लिए एक बेहतरीन स्कीम है और डॉ. मनमोहन सिंह की आधार कार्ड योजना को वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी भी आगे फैला रहे हैं। हर जरूरती दस्तावेजों में आज की तारीख में आधार कार्ड की अति आवश्यक कर दिया है। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण वर्ष 2009 में डॉ. मनमोहन सिंह के समय से ही बनाया गया था। देश के हर व्यक्ति को पहचान देने और सरकार की तरफ से बनाये जाने वाली जनहित सेवाएं, उस तक पहुंचाने के लिए इस योजना को आरम्भ किया गया था। आज आधार कार्ड नम्बर को पैन खाते से लिंक करना, मोबाइल नम्बर को लिंक करना, बैंक के खातों को आधारकार्ड नम्बर से जोड़ना अति आवश्यक हो चुका है। यहां तक कि डेथ सर्टिफिकेट बनवाने के लिए भी आधारकार्ड के नम्बर को अनिवार्य कर दिया गया है। पूर्व में केन्द्रीय मंत्री भी कह चुके हैं कि सरकार ड्राइविंग लायसेंस के लिए भी आधारकार्ड से जोडना अनिवार्य कर सकती है। 28 जनवरी 2009 को नोटीफिकेशन जारी करके इसके लिए जो कार्यालय तैयार किया गया है उसमें 115 अधिकारियों और स्टाफ की कोर टीम थी।[6]

डॉ. सिंह के द्वितीय प्रधानमंत्रित्व कालावधि में ही राइट टू एजुकेशन यानि शिक्षा का अधिकार अस्तित्व में आया। शिक्षा के मूल अधिकार के तहत 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु समूह के सभी बालक–बालिकाओं को शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित किया गया कि इस आयु समूह के देश के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा दी ही जायेगी।

फलतः

राष्ट्रीय हितों को सम्बर्धित करते हुए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21A के अंतर्गत 6–14 वर्ष के बच्चों की शिक्षा की अनिवार्यता, निःशुल्क या संस्थाओं में गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारजनों के बच्चों को 25 प्रतिशत प्रवेश दिलाना बन्धनकारी किया गया। इस बात के लिए शिक्षा का अधिकार नामक

अधिनियम 2009 प्रतिपादित किया गया, जिसके परिपालन कराने के लिए तत्सम्बन्धी नियम 2010 बनाये जाकर अप्रैल 2010 को सार्वजनिक रूप से अधिसूचित कराये गये। जो भी प्रायवेट स्कूल या संस्थाएं नियमों का पालन करते असफल पाये जाते हैं तो उनके ऊपर रूपये 1,00,000/– की पैनाल्टी तथा अधिकतम 10,000/– (दस हजार रू.) प्रति दिन के हिसाब से अधिरोपित किये जाने का भी प्रावधान किया गया है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 व उसके नियम 2010 को रेगुलेट कराये जाने के लिए NCPCR (बच्चों के शिक्षा अधिकार सुरक्षा कायम रखने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा आयोग) की स्थापना की गई है। इस आयोग की समिति में सिविल सोसायटी ग्रुप, स्टूडेन्ट, शिक्षक, प्रशासक, आर्टिस्ट, लेखक, गवर्नमेंट, विधिवेत्ता, राजनेतागण, स्टेक होल्डर, न्यायिक प्राधिकारी आदि लोगों को शामिल किए जाने का प्रावधान सुनिश्चित किया गया है। NCPCR के माध्यम से ही भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 का प्रायोजन कराया जाकर प्रत्येक राज्यों में शिक्षा गारण्टी योजनाओं का सुनिश्चित कराया जा रहा है। ताकि शिक्षा का अधिकार का अवसर हर एक नागरिक को समान रूप से समय–समय पर मिल सके और किसी भी प्रकार की बाधायें भविष्य के निर्माण में बाधक न बन सके।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बना जिसके लिए अप्रैल 2010 से नियम बनाया गया है। यह अधिनियम शिक्षा प्राप्त करने की अनिवार्यता तथा निःशुल्क शिक्षा की अनिवार्यता से सुरक्षा के उपायों से काफी उपयोगी हो चुका है। शिक्षा का स्तर सकारात्मक रूप से उत्तरोत्तर वृद्धि करता जा रहा है।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह सरकार द्वारा 1 अप्रैल सन् 2010 को समग्र एफ.डी.आई नीति जारी की गई। इस नीति में यह घोषणा की गई कि प्रत्यक्ष विदेश निवेश को चोर उस दरवाजे से देश में आने से रोकने का व्यवस्थित प्रयास हो, इसके लिए एफ.डी.आई. नीति को काफी उदार बनाया गया है। कम्पनियों को यह छूट दी गई है कि विदेशी टेक्नालाजी और मशीनों के क्रय के बदले समता पूंजी के माध्यम से भुगतान कर सके। एफ.डी.आई नीति में यह स्पष्ट व्यवस्था है कि कोई भी कम्पनी अपने उद्योग क्षेत्र के लिए तय की गई विदेशी निवेश की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सकेगी। पहले वर्ष में सरकार ने एफ.डी.आई. सम्बन्धित तमाम नियमों को मिलाकर एक समग्र नीति की घोषणा की थी जिसमें तमाम नियमों को मिलाकर एक समग्र नीति की घोषणा की थी जिसमें प्रत्येक छः मास समीक्षा करने की बात भी कही गयी थी। इस नीति में यह तीसरा संशोधन किया गया है। कम्पनियों द्वारा काफी समय से इसकी मांग की जा रही थी। पूंजीगत सामग्री और आधुनिकतम मशीनों को आयात करने के बदले विदेशी कम्पनियों को शेयर जारी करने की छूट प्रदान की जाय। अतः यह संशोधन यह ध्यान में रखते हुए किया गया है। भारत मे विदेशी निवेश मुख्य रूप से दो तरीकों द्वारा प्राप्त होता है[7] –

(1) स्वतः अनुमोदित मार्ग
(2) सरकारी मार्ग

(1) स्वतः अनुमोदित मार्ग – स्वतः अनुमोदित मार्ग के अन्तर्गत 100 प्रतिशत तक का एफ.डी.आई. सभी क्षेत्रों में किया जा सकता है। निम्न क्षेत्र ऐसे जहां सरकारी अनुमति के बिना एफ.डी.आई. नहीं हो सकती है –

1. प्रस्ताव जिसमें विदेशी सहयोगी का भारत में उसी क्षेत्र में वर्तमान वित्तीय/तकनीकी सहयोग है।
2. वित्तीय सेवा क्षेत्र में जहां सेवी विनियमावली लागू है, उसमें किसी मौजूदा भारतीय कम्पनी में शेयर अधिग्रहीत करने का प्रस्ताव है।
3. अधिसूचित क्षेत्रीय नीति/सीमा से परे या ऐसे क्षेत्र जिसमें एफ. डी.आई. की अनुमति नही है।

इस प्रकार वर्ष 2013 में द्वितीय प्रधानमंत्रित्व काल में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्बन्ध बनाने में सराहनीय योगदान दिये हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और रूस के राष्ट्रपति ब्लादी मीर पुतिन की सलाना शिखरवार्ता, परमाणु रक्षा और व्यापार के मोर्चा पर अपेक्षाओं के अनुरूप ठोस परिणाम हासिल करने में भले ही सफल न हो रहे हो मगर इसके रणनीतिक और दीर्घकालीन हितों पर गहरी होती आपसी समझ की झलक अवश्य मिली, जिस वक्त अगले साल अमरीकी फौज की वापसी के बाद अफगानिस्तान में बनने वाले हालात उस क्षेत्र की प्रमुख चिंता हो। भारत और रूस को आंतकवाद के मुद्दे पर एक स्वर मे बोलना अति महत्वपूर्ण है। डॉ. मनमोहन सिंह 23 अक्टूबर सन 2013 को पुतिन वार्ल के बाद जारी साझा बयान में कह गया कि गुमराह करने वाले नारों की आड़ लेकर किए जा रहे आतंकवादी हमले हमारे राष्ट्रीय अखण्डता पर प्रहार है और आतंकवादियों को मदद, बढ़ावा तथा पनाह देने वाले देश भी आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने वाली ताकतों में बराबर दोषी है, साफ तौर पर इशारा कश्मीर और चेचन्या में आतंकवाद फैला रहे गुटों की तरफ है। इससे यह उम्मीद बनी की आने वाले दिनों में दोनों राष्ट्र अन्य देशों के साथ मिलकर अफगानिस्तान में तालिबान या अन्य आतंकवादी गुटों के प्रभाव को नियंत्रित करने का प्रयास करेंगे। बहरहाल रक्षा एवं परमाणु सहयोग भारत रूस रिश्तों की बुनियाद है, ऐसे में कुन्डनकुलम् परमाणु परियोजना के लिए तीसरे एवं चौथे रिएक्टरों की खरीद सम्बन्धी समझौते में अड़चन कायम रखना निराशाजनक है। भारत के परमाणु दुर्घटना क्षतिपूर्ति कानून की व्याख्या को लेकर दोनों देश अटके रहे। रक्षा सम्बन्धों को आगे बढ़ाने की भी कोई नई ठोस रूपरेखा सामने नहीं आई। हालांकि दोनों पक्षों में इसका इरादा जताया। इसके बावजूद रूस से भारत तक गैस पाइप लाइन की नई योजना और आपसी व्यापार बढ़ाने की चर्चा शिखर वार्ता में सकारात्मक पहलू रहे हैं। भारत रूस सम्बन्धों का सबसे कमजोर पक्ष आपसी व्यापार है, जो आज की सलान महज 11 (ग्यारह अरब डालर) अरब डालर पर सीमित है। यह अच्छी बात है कि इसका बड़ा हिस्सा मशीनरी और उपकरणों का है और आर्थिक गिरावट के इस दौर में भी पिछले वर्ष इसमें 25 फीसदी का इजाफा हुआ लेकिन दोनों देशों के सम्बन्धों की पूरी संभावना तभी साकार हो सकती है, जब रक्षा और परमाणु सहयोग के साथ–साथ आपसी व्यापार में भी तीव्र बढ़ोत्तरी की राह तैयार हो।[8]

3. अर्थशास्त्री अवधारणाएं

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के एक महान अर्थशास्त्री के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. मनमोहन सिंह का जीवन अनेक उपलब्धियों और उत्कृष्ठताओं से भरा हुआ है। उन्होंने एक महान अर्थशास्त्री होने के साथ–साथ अनुभवी शिक्षाविद भी है। उन्होंने अर्थशास्त्र विषय में उच्च शिक्षा ग्रहण की। भारतीय अर्थव्यवस्था को एक मजबूत आधार देने वाले डॉ. सिंह ने लम्बे समय तक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक आर्थिक संगठनों के साथ काम किया है। भारत देश की आर्थिक नीतियों के निर्माण में और आर्थिक नीतियों के क्रियान्वयन में निर्णायक भूमिका निभाने वाले एवं विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था के प्रबल पक्षधर एवं कुशल निर्देशक पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह माने जाते हैं।

डॉ. मनमोहन सिंह एक उच्च कोटि के अर्थशास्त्री हैं और इनकी

इस योग्यता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 1991 में जब देश पर आर्थिक संकट के बादल मड़रा रहे थे तब तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहा राव ने इनमें अपना विश्वास जगाते हुए इन्हें देश का वित्त मंत्री नियुक्त किया। पी.व्ही. नरसिंहा राव जानते थे कि ऐसी परिस्थितियों में केवल डॉ. सिंह ही भारत देश को आर्थिक संकट से बचा सकते हैं। देश का विदेशी मुद्रा कोष काफी कम हो चुका था और भारी भरकम विदेशी कर्ज भी बकाया था, ऐसी विपरीत परिस्थितियों में निर्णायक भूमिका निभाते हुए वह न केवल तत्कालीन प्रधानमंत्री के विश्वास में खरे उतरे अपितु देश की अर्थव्यवस्था को एक नई मजबूती भी प्रदान की। इस सफलता ने डॉ. मनमोहन सिंह को न केवल देश में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक भविष्यद्रस्टा अर्थशास्त्री के रूप में ख्याति दिलाई।[9]

दिसम्बर 1990 में डॉ. सिंह को प्रधानमंत्री के आर्थिक कार्यों के सलाहकार पद पर नियुक्त किया गया, इस पद पर चार महीने कार्य करने के बाद यू.जी.सी. का अध्यक्ष पद सौंपा गया। 20 जून 1991 तक इस पद पर कार्य करने के बाद डॉ. मनमोहन सिंह का भारतीय राजनीति में प्रवेश हुआ। वित्तमंत्री के तौर पर डॉ. सिंह का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा रहा। उनकी आर्थिक नीति की सराहना सम्पूर्ण भारत में की गई। देश की डूबती अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने में सफलता हासिल की। मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक राज्यसभा में विपक्ष के नेता रहे।

इस प्रकार डॉ. मनमोहन सिंह की अर्थशास्त्री विचारधारा के साथ लगभग 50 वर्षा तक आर्थिक क्षेत्र में निर्णायक भूमिका निभाने वाले डॉ. सिंह का प्रधानमंत्री बना भले ही एक आश्चर्यजनक घटना रही हो किन्तु उनकी कार्यकुशलता, ज्ञान, सूझ–बूझ और अर्थशास्त्री अवधारणा में किसी को कोई संदेह नहीं है। श्रीमती सोनिया गांधी ने स्वयं कहा था कि डॉ. मनमोहन सिंह के हाथों में पूरी तरह से भारत देश सुरक्षित है। डॉ. सिंह ने सोनिया का यह विश्वास अकारण नहीं था। वह भलीभांति जानती थी कि केवल मनमोहन सिंह ऐसे व्यक्ति हैं जो राजनैतिक षडयंत्रों से दूर रहकर देश का विकास कर सकते हैं।

4. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों के विकासशीलता का स्थापन

आर्थिक जगत के श्लाका पुरूष कहे जाने वाले डॉ. मनमोहन सिंह के जीवन में 1991 से 1996 तक का समय सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहा राव ने आंकड़ों के इस जादूगर को अपने मंत्रिमण्डल में वित्तमंत्री नियुक्त किया। वित्तमंत्री बनते ही डॉ. सिंह ने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नया स्वरूप दिया, अपितु सरकार के आर्थिक नीतियों में भी व्यापक परिवर्तन कर उन्हें पूर्णतः एक नया आयाम दिया। आर्थिक विशेषज्ञों ने डॉ. मनमोहन सिंह के प्रयासों के मंथन के रूप में करार दिया।

वित्त मंत्री के तौर पर डॉ. मनमोहन सिंह की ख्याति दिनोदिन बढ़ रही थी। सरकार मे आर्थिक नीतियों की परिवर्तनशीलता का सिलसिला राष्ट्र तथा राष्ट्र की आम जनता के हित मे होते हुए भी कुछ राजनीतिज्ञों के कारण परेशानी का कारण बना हुआ था। पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने डॉ. सिंह पर विश्वास जताते हुए आर्थिक नीति के मामलों में स्व निर्णय लेने की आजादी दी ताकि वह देश की अर्थव्यवस्था की मूलभूत सुविधाओं को जुटाने में बाधक प्रमुख समस्याओं का पता लगाकर उनके निवारण के उपयों का पता लगा सके। ऐसा परिवेश तैयार करके कि जिसमें देश का व्यापार दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर सके। भारत देश की अर्थव्यवस्था को पुर्नजीवित करने हेतु पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने जो भी प्रयास किए उनकी सफलताओं का बहुत कुछ श्रेय पूर्व एवं उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहाराव को भी जाता है।[10]

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों के विकासशीलता में उल्लेखनीय योगदान है। उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के एक स्वस्थ्य एवं मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र तथा सुदृढ़ एवं लचीले निजी क्षेत्र दोनों की आवश्यकता है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में डॉ. सिंह का यह विश्वास कोई नया नहीं है। भारत देश के वित्तमंत्री तौर पर भी उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था का पुरजोर समर्थन किया। भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था का फार्मूला देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू की देन है। वे अंग्रेजों के सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के सह अस्तित्व की विचारधारा से खासे प्रभावित थे।

डॉ. मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार वित्तीय, प्रशासनिक, निवेश और अन्य माध्यमों से राज्यों के बीच और राज्यों के अंदर बढ़ रहे क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध रही है। यह चिंता की बात है कि क्षेत्रीय असंतुलन न केवल ऐतिहासिक उपेक्षा बल्कि योजना आवंटनों और केन्द्र सरकार में सहायता की विसंगतियों के कारण भी बढ़ा है। यहां तक कि दसवीं पंचवर्षीय योजना में बिहार असम और उत्तरप्रदेश जैसे राज्यों को जो प्रति व्यक्ति आवंटन मिला है वह राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार पिछड़े राज्यों के लिए एक अनुदान आयोग बनाने पर विचार की है जिसका इस्तेमाल इन राज्यों में उत्पादन परिसम्पत्तियों के सृजन के लिए किया जायेगा। केन्द्र सरकार पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के औद्योगीकरण में तेजी लाने की शीघ्रगामी प्रयास की है।[11]

डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार आर्थिक क्षेत्र में समय–समय पर विशेष आर्थिक पैकजों की घोषणा करती रही है, जैसे कि पूर्वोत्तर राज्यों, बिहार, जम्मू कश्मीर आदि। गठबन्धन सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद को सहकारी संघ वाद का एक अधिक प्रभावी माध्यम बनाई है, इसकी बैठक के लिए वर्ष में कम से कम दो बार निर्धारित की गई है। यह बैठक भारत देश के अलग–अलग राज्यों में सम्पन्न करने की व्यवस्था बनाई गई थी। राष्ट्रीय विकास परिषद राज्यों की वित्तीय स्थिति के मामलों को उठाया था। इस सम्बन्ध में परिषद को भी शामिल किया गया। अन्तर्राज्यीय परिषद को भी सक्रिय बनाया गया था। राष्ट्रीय प्राथमिकता के विषयों जैसे परिवार नियोजन कार्यक्रम को छोड़कर केन्द्र द्वारा प्रायोजित सभी योजनाएं राज्यों को हस्तान्तरित कर दी गई थी। सरकार द्वारा संमुचित विचार विमर्श तथा आम सहमति के बाद उचित समय पर तेलंगाना राज्य के सृजन की मांग पर विचार किया है।

5. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वैश्वीकरण प्रतिस्पर्धा में आर्थिक दशा

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वैश्वीकरण प्रतिस्पर्धा में आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किए हैं। सरकार ने न्यूनतम साझा कार्यक्रम में मानवीय आधार पर आर्थिक सुधारो को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए स्पष्ट किया है कि संप्रसंग सरकार द्वारा आर्थिक, सुधार कार्यक्रमों के माध्यम से आम नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास किया जाएगा। आर्थिक सुधारों के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का दृष्टिकोण भी वही है कि आर्थिक सुधारों के लाभ किसी वर्ग विशेष तक सीमित न रहकर सभी लोगों तक पहुंचने चाहिए।

न्यूनतम साझा कार्यक्रम में बैंको में बचत को बढ़ावा देने वाली योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रति आश्वस्त करते हुए कहा गया है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को पूर्ण प्रबंधकीय स्वायत्ता दी जायेगी साथ ही वादा किया गया है कि ब्याज दर इस प्रकार तय की जायेगी जिससे निवेश को व बचतकर्ताओं विशेषकर पेंशनरों एवं वरिष्ठ नागरिकों को लाभ पहुंचे।

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय

वैश्वीकरण प्रतिस्पर्धा में आर्थिक दशा में सुधार हेतु विश्व सम्बन्धों में बहुध्रुवता को बढ़ावा दिया तथा सरकार दक्षिण एशिया में अपने पड़ोसियों के साथ आर्थिक व्यापारिक व अन्य सम्बन्धों को और अधिक बेहतर बनाने तथा सार्क को मजबूत करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। जल संसाधन, विद्युत और पारिस्थितिकी सरंक्षण के क्षेत्र में क्षेत्रीय परियोजनाओं पर विशेष ध्यान दिया गया। पाकिस्तान के साथ सभी मुददों पर बातचीत को व्यवस्थित ढंग से और सतत आधार पर आगे बढ़ाया गया। मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार श्रीलंका में ऐसी शांति वार्ताओं का समर्थन किया। श्रीलंका की क्षेत्रीय अखण्डता और एकता को बरकरार रखते हुए तमिलों तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों की न्यायसंगत आकांक्षाओं को पूरा कर सके। देश के साथ अन्य बकाया मुददो को हल किया गया। नेपाल के साथ आपसी हित के आधार पर आर्थिक विकास के लिए गहन बातचीत शुरू की गई।[12]

डॉ. सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में नवीन आर्थिक नीति को अपनाया गया। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य विश्व में हुई आर्थिक प्रगति एवं तकनीकी ज्ञान का लाभ उठाकर देश में आर्थिक विकास की गति को तेज करना है। इस नीति के द्वारा देश में विद्यमान प्रशासनिक नियंत्रणों को समाप्त करके उदारीकरण का मार्ग प्रशस्त किया गया, इसके साथ ही निजी निवेश को प्रोत्साहित एवं विदेशी पूंजी को आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि नई आर्थिक नीति के द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़कर एक नये अध्याय का श्रीगणेश किया गया है। डॉ. मनमोहन सिंह सरकार में अर्थव्यवस्था में हुए सुधार और वैश्वीकरण का प्रभाव देश के आर्थिक स्तर में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। वैश्वीकरण से आयात निर्यात पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। विश्व व्यापार में भारत के विदेशी व्यापार का योगदान में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के कारण विदेशी निवेश में वृद्धि तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भारत में अपने निवेश में वृद्धि की है। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार में भारत देश में विदेशी निवेश के वृद्धि के साथ अर्थव्यवस्था का पर्याप्त लाभ प्राप्त हुआ है। साथ ही वैश्वीकरण के बाद विदेशी एवं स्थानीय उत्पादकों के मध्य परस्पर प्रतियोगिता में वृद्धि हुई है और परिणामस्वरूप अनेक वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में कमी भी आई है। उपभोक्ताओं को उत्कृष्ठ गुणवत्ता वाली वस्तुएं प्राप्त हो रही है, अब उपभोक्ताओं को पहले से अधिक विकल्प उपलब्ध है तथा उपभोक्ताओं के आर्थिक एवं जीवन स्तर में सुधार आया है। साथ ही वैश्वीकरण से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा सेवा क्षेत्र में विस्तार आदि के प्रभाव से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति में वृद्धि हुई है।

6. महिला सशक्तीकरण व उनके सुरक्षा उपाय

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्वकाल में महिलाओं का पुरूषों के समान दर्जा, उन्हें विभिन्न पदों पर आरक्षण, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति में महिलाओं का आरक्षण की व्यवस्था के साथ महिला सशक्तीकरण पर विशेष कार्य शुरू किए गये। महिलाओं की सुरक्षा हेतु काननू बनाये गये। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार महिलाओं के लिए विधानसभाओं पर लोकसभा में एक तिहाई आरक्षण हेतु कानून लाया गया, महिलाओं में घरेलू हिंसा तथा महिला पुरूष के बीच भेदभाव के विरूद्ध कानून बनाया जायेगा। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार यह सुनिश्चित की है कि पंचायतों में प्राप्त होने वाली सभी निधियों का कम से कम एक तिहाई भाग महिला तथा बच्चों के विकास के कार्यक्रमों के लिए रखा जाये। पेयजल, स्वच्छता, प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण आहार से सम्बन्धित सभी विकास योजनाओं की जिम्मेदारी लेने के लिए ग्रामीण महिलाओं तथा उनके संघों को प्रोत्साहित किया गया है।

महिला सशक्तीकरण व महिलाओं के लिए सुरक्षा उपाय अन्तर्गत महिला को सभी क्षेत्रों में सम्पूर्ण कानूनी समानता को एक व्यावहारिक सच्चाई के रूप में बनाया गया। विशेषकर भेदभाव पूर्ण कानूनों को समाप्त करके ऐसे नये कानून बने जो कि महिलाओं का उनकी सुरक्षा, हक उदाहरण के लिए महिलाओं को विभिन्न हक मकान, भूमि जैसी परिसम्पत्तियां पर स्वामित्व के समान अधिकार प्रदान किये गये हैं।[13]

डॉ. मनमोहन सिंह अपने प्रधानमंत्रित्व काल में महिला सशक्तीकरण अन्तर्गत महिलाओं को अधिकार सम्पन्न बनाने की खास प्राथमिकता रही है। इसके लिए लड़कियों को पढ़ाना डॉ. सिंह का पहला कदम रहा है। बेटियां हमारे देश का भविष्य है, उनकी आर्थिक नीतियों में यह ख्याल रखा गया कि बेटियों के अधिकारों पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े, उन्हें फूलने –फलने का अधिक से अधिक अवसर मिले। महिलाओं को अच्छा पोषण आहार एवं चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध कराना प्राथमिकता रही है। महिलाओं के उत्थान हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन में महिलाओं के प्रति होने वाले सभी प्रकार के भेदभावों के प्रति कड़ा रूख अपनाते हुए कहा गया है कि इन्हें पूर्णतः समाप्त किए जाने का संकल्प समाज में लेना होगा। इस सम्मेलन में महिलाओं की शिक्षा उद्यम, आत्मनिर्भरता एवं रोजगार हेतु व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की बात कही गई। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिवर्ष अपने तत्वाधान में महिला सशक्तीकरण अथवा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा महिलाओं को सम्मान देने का वचन लेते हुए महिला वर्ष का आयोजन करता है। भारत सहित विश्व के सभी देशों में महिलाओं का बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सर्वागीण विकास के द्वारा आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। विभिन्न प्रकार की संस्थाओं के द्वारा महिलाओं को आर्थिक क्षेत्र में प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है। वर्ष 2011 में भारत के कई राज्यों में महिलाओं की स्थिति बेहतर पाये गयी है। केरल, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि राज्य में अन्य राज्यों की तुलना में महिलाओं की स्थिति बेहतर पाई गई है। इन राज्यों में महिलाएं आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भरता की प्रवृत्ति उच्च पायी गई है। महिलाएं परिवार के साथ आर्थिक मदों में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता निभा रही है। महिलाओं द्वारा वित्तीय संस्थाओं से प्रदान की गई आर्थिक सहायता का 90 प्रतिशत तक आसानी से भुगतान कर दिया जाता है।[14]

निष्कर्ष

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह 22 मई 2004 को 72 वर्ष की आयु में भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देश के चौदहवें (14वें) प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किये गये। जिस समय भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री की शपथ दिला रहे थे, भारतीय गणतंत्र के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व घटना थी क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश में पहली बार ऐसा हुआ जब एक अल्प संख्यक समुदाय से सम्बन्ध रखने वाले राष्ट्रपति ने अन्य अल्पसंख्यक समुदाय से सम्बन्ध रखने वाले प्रधानमंत्री को प्रथम बार (22.05.2004) पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई और वह प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किये गये तथा मई 2009 में पुनः दूसरी बार प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिला।

भारत को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए मनमोहन सिंह ने कई मजबूत कदम उठाये तथा जिसे देश की जनता को तो लाभ हुआ भी साथ ही सम्पूर्ण विश्व अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत एक मजबूत राष्ट्र बनकर उभरा है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का दूसरी बार लगातार प्रधानमंत्री (2009 से मई 2014) के पद पर निर्वाचित होना यह स्वतः प्रमाणित कर देता है

कि डॉ. मनमोहन सिंह एक लोकप्रिय नेता, उदारीकरण के जनक, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अर्थशास्त्री होने के साथ–साथ एक सफल प्रधानमंत्री भी रहे हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के जीवन पर उपलब्ध सामग्री का गहन अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि उनका कार्मिक जीवन निरंतर आगे बढ़ता रहा और उनमें कभी जड़ता नहीं आई। किसी एक पद पर उन्होंने लम्बे समय तक कार्यकाल देश के वित्त मंत्री के रूप में व्यतीत किया। चुनौतियां स्वीकार करना डॉ. सिंह को बेहद पसन्द थी।

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों के विकासशील का स्थापन किया गया तथा सम्पूर्ण देश की डूबती हुई अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का अवस्मिरणीय योगदान दिया है। निष्कर्षतः डॉ. सिंह के कार्यकाल में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धा एवं आर्थिक दशा में सुधार हुआ है तथा इसका लाभ समाज के सभी वर्गो को समान रूप से मिला है।

महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र में सफल होने का मार्ग में कई कठिनाई है, जैसे महिलाओं में निरक्षरता, तकनीकी ज्ञान का अभाव, आर्थिक स्वतंत्रता, स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का अभाव, सलाह एवं परामर्श सुविधाओं की कमी, सरकार और पुरूषों द्वारा सहयोग का अभाव, जिसके कारण ये आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में सशक्त बनकर सामने नही आ पाती है।

सन्दर्भ

1. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, अर्थयोगी से अन्तर्राष्ट्रीय मंच तक, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 83–84.
2. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, अर्थयोगी से अन्तर्राष्ट्रीय मंच तक, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 81–82.
3. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 116–117.
4. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 127.
5. सामाजिक विज्ञान, वर्ष 2016, म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम, विजने पब्लिकेशन, भोपाल, पृष्ठ 243.
6. डॉ. मनमोहन सिंह की पांच कड़ी उपलब्धियां, विकपीडिया इन्टरनेट दिनांक 1–1–2012, पृष्ठ 4–6.
7. सिंह, भूपेन्द्र कुमार एण्ड पाण्डेय रामेश्वर (2013), जीवन और शोध, रचनात्मक अभिव्यक्त, 137/7, गौरव विवेक नगर, प्रतापगढ़ (उ.प्र.).
8. दैनिक भास्कर, सतना, 23 अक्टूबर 2013, बुधवार, सम्पादकीय भारत–रूप में हितों की नई समझ।
9. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 75–76.
10. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 103–104.
11. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 130–131.
12. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 138–139.
13. भरद्वाज, अतुल एवं गर्ग, विवेक (2005), डॉ. मनमोहन सिंह आंकड़ों के जादूगर का सफर, मानस पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 192–193.
14. जीवन सन्दर्भ (2013), 137/7 गौरव, विवेक नगर, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 436–437.